मुनि सुमेरमल सुदर्शन ने ओढाई चादर

तेरापंथ के 11वें आचार्य पद पर महाश्रमण का हुआ अभिषेक

सरदारशहर, 23 मई, 2010

जैन धर्म को विश्व अंचल तक पहुंचाने वाले संगठन तेरापंथ के दशम अधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के उत्तराधिकारी आचार्य महाश्रमण का 11वें अनुशास्ता के तौर पर सम्पूर्ण धर्मसंघ की ओर से गांधी विद्या मन्दिर के विशाल प्रांगण में पदाभिषेक किया गया। करीब 45 हजार श्रद्धालुओं की उपस्थिति में हुए इस समारोह में जैसे ही दीक्षा ज्येष्ठ मुनि सुमेरमल 'सुदर्शन' ने आचार्य पद की चादर ओढाई वैसे ही आकाश जयघोषों से गूंज उठा। इस मौके पर देश के ख्यातनाम राजनीतिज्ञ लालकृष्ण आडवाणी, राजनाथसिंह, पूर्व राजस्थान भाजपा अध्यक्ष महेश शर्मा, राज्यसभा सांसद, सन्तोष बागडोरिया, राजस्थान के स्वास्थ्य मंत्री राजकुमार शर्मा विधायक राजेन्द्र राठौड़, अशोक पींचा, राजकुमार रिणवां, रामसिंह कस्वा आदि ने उपस्थित रहकर तेरापंथ की इस विलक्षण परम्परा को निहारा। महामंत्रोच्चार, मंगल संगान, जैन धर्म के विधिविधानों के साथ आचार्य महाश्रमण के हुए पदाभिषेक के बाद साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने नवीन धर्मध्वज रजोहरण एवं परमार्जनी, मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने आहार के उपयोग में आने वाले कलात्मक पात्र तासक, शासन गौरव साध्वी राजीमति ने पानी के उपयोग में आने वाली गिलास, प्याला भेंट किया। इन पात्रों को साध्वी समाज के द्वारा संस्कृत, प्राकृत के आगम वाक्यों से भावित करने के साथ कलात्मक ढंग से निर्मित किया गया था। मुनि सुखलाल ने सम्पूर्ण धर्मसंघ की ओर से प्रस्तुत अभिनन्दन पत्र का वाचन करते हुए मुनि महेन्द्र कुमार, मुनि किशनलाल, मुनि धनंजय कुमार के साथ आचार्य महाश्रमण को भेंट किया। आचार्य महाश्रमण ने धर्मसंघ की ओर से किये गये पदाभिषेक को विनम्र शब्दों में स्वीकार करते हुए तीन संकल्प ग्रहण किये। उन्होंने कहा कि मैं कल्पना करता हूं कि इन संकल्पों को आचार्य महाप्रज्ञ करवा रहे हैं। आचार्य महाश्रमण ने संकल्प के प्रत्येक शब्द को दो–दो बार उच्चरित करते हुए कहा कि मैं तेरापंथ की परम्परा, मर्यादा, आचार विचार और समाचारी की एकता को अक्षुण्ण रखूंगा। मैं तेरापंथ धर्मसंघ के दायित्व को पूर्ण निष्ठा के साथ निर्वाह करूंगा। मैं तेरापंथ के व्यापक दृष्टिकोण एवं कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का प्रयत्न करूंगा।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा के संयोजकत्व में चली इस अभिषेक प्रक्रिया में मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने सम्पूर्ण धर्मसंघ की समर्पण भाषा उच्चारण करवाया। तेरापंथ की सर्वोच्च नीति नियामक संस्था विकास परिषद के संयोजक लालचन्द सिंघी ने सभी केन्द्रीय तेरापंथी संस्थाओं के अध्यक्ष मंत्री को संकल्प ग्रहण करवाये। सभी संस्थाओं ने इस मौके पर अभिनन्दन पत्र भी भेंट किये। पदाभिषेक की इस आकर्षण प्रक्रिया में जब साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने मंच पर खाली पड़े आचार्य के पट्ट की ओर इशारा करते हुए आचार्य महाश्रमण को पट्टासीन होने का निमंत्रण दिया। सम्पूर्ण जनता में उत्सुकता आकाश को छूने लगी। वयोवृद्ध मुनि बालचन्द, मुनि पानमल मुनि

धर्मरूचि, मुनि मोहनलाल, मुनि भूपेन्द्रकुमार ने पट्टासीन होने वाले आचार्य महाश्रमण की अगवानी की।

इस अमल चद्दर का सम्मान रखना मेरा परम कर्त्तव्य

– आचार्य महाश्रमण

आचार्य महाश्रमण ने पदाभिषेक प्रक्रिया के बाद संघ के नाम अपने प्रथम संबोधन में कहा कि परमात्मा भगवान महावीर एक लोकोत्तम पुरुष थे। वे स्वयं वीतराग और दुनिया को वीतरागता का पथदर्शन देने वाले महापुरुष थे। परमप्रभु महावीर के वीतराग दर्शन पर आधारित है – जैनशासन उसी का एक अंग है तेरापंथ धर्मसंघ। उसके प्रणेता हैं परम पूज्य परमश्रद्धेय आचार्य भिक्षु। उन्होंने तेरापंथ को विचार, आचार और मर्यादा–व्यवस्था के विधान से सुसज्जित बनाया। उनकी उत्तराधिकार परम्परा में परमपूज्य आचार्य भारमलजी, आचार्य रायचन्दजी, आचार्य जीतमलजी, आचार्य मघराजजी, आचार्य माणकलालजी, आचार्य डालचन्दजी और आचार्य कालुरामजी हुए। मैं उनका प्रत्यक्षदर्शी नहीं हूं। पूज्य कालुगणी के उत्तराधिकारी आचार्य तुलसी और उनके उत्तराधिकारी आचार्य महाप्रज्ञजी हुए। इन दोनों धर्माचार्यों का वरद सान्निध्य मुझे प्राप्त हुआ। मेरे जीवन के निर्माण में इन दोनों महान गुरुओं का महनीय योगदान है। गुरुदेव तुलसी ने मुझे धर्मसंघ की अन्तरंग व्यवस्था से जोड़ा और पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने तो मुझे तेरापंथ का उत्तराधिकार भी सौंप दिया। उन्होंने अपने पवित्र करकमलों से तेरापंथ के उत्तराधिकार की चद्दर मुझे ओढ़ाई, मुझे संघ का युवाचार्य बना दिया।

परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के साथ धर्मसंघ का सर्वोच्च नेतृत्व स्वाभाविक रूप से मेरे में समाविष्ट हो गया। आज धर्मसंघ ने धवल चद्दर ओढ़ाकर औपचारिक रूप में मुझे तेरापंथ के ग्यारहवें आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित किया।

भिक्षुशासन की इस अमल चद्दर का अपने पवित्र कार्यों के द्वारा पूर्ण सम्मान रखना मेरा परम कर्त्तव्य रहेगा। पूर्ववर्ती देशों आचार्यों का परम प्रसाद मुझे प्राप्त होता रहे। मैं चतुर्विध धर्मसंघ की समर्पित और आत्मीय भाव से आध्यात्मिक सेवा करता रहूं, यह मेरी स्वयं के प्रति मंगलकामना है। पूरा धर्मसंघ सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र की आराधना में वर्धमान रहे – मंगल कामना।

इस गरिमापूर्ण अवसर पर मैं मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी (लाडनूं) के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। उन्होंने गुरुदेव तुलसी की आज्ञा से मुझे मुनि दीक्षा प्रदान की, शिक्षा और संस्कार दिए। इस मौके पर उन्होंने वहां उपस्थित दीक्षा ज्येष्ठ मुनि सुमेरमल 'सुदर्शन' आदि 12 संतों को वंदन किया एवं भारत के अन्य प्रान्तों में विचरण करने वाले मुनियों को भी भाव वंदन किया। हमारे धर्मसंघ में साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा का महत्वपूर्ण स्थान है। मुझे महासती कनकप्रभाजी, साध्वीप्रमुखा और महाश्रमणी के रूप में प्राप्त है। इन्होंने गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के शासनकाल में संघीय व्यवस्था के क्षेत्र में अपनी सेवाएं दी हैं। अब मुझे उनकी सेवाएं प्राप्त हैं।

परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने साध्वी विश्रुतविभाजी को मुख्य नियोजिका के रूप में नियुक्त किया। इन्होंने आचार्यश्री महाप्रज्ञ के आचार्यकाल में व्यवस्था के क्षेत्र में

अपनी सेवाएं दी। अब मुझे इनकी सेवाएं प्राप्त हैं। धर्मसंघ की इन दोनों विभूतियों का सहयोग मेरे लिए श्रेयस्कर बना रहे। सभी साधु–साध्वियों और समणश्रेणी का योग मेरे लिए मंगलमय बना रहे। श्रावक–श्राविका समाज की उपलब्धि मेरे लिए शिवंकर बनी रहे।

इस अवसर पवर मैं अपने संसारपक्षीय पिता स्वर्गीय झूमरमलजी दूगड़ और संसारपक्षीय मां स्वर्गीया नेमादेवी की स्मृति करता हूं।

तेरापंथ धर्मसंघ के दायित्व को निभाते हुए मैं यथासंभव यथोचित रूप में जैन शासन और मानवजाति की सेवा में अपनी शक्ति का नियोजन करता रहूंगा, यह मेरा संकल्प है।

परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रारब्ध और पोषित गतिविधियों को द्रव्य, काल, भाव की स्थिति के अनुसार विवेचनपूर्वक यथौचित्य संचालित करने का मेरा चिन्तन है।

मैं इस उल्लासमय प्रसंग में धर्मसंघ के सभी साधु–साध्वियों को एक सौ एक (101) कल्याणक और औषध आदि के सन्दर्भ में किए जाने वाले विगय–वर्जन आदि की एक वर्ष के लिए बख्शीष करता हूं।

आश्चर्यचकित हूं नेतृत्व की प्रणाली को देख : आडवाणी

पदाभिषेक समारोह में विशेष रूप से उपस्थित भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि आज ऐतिहासिक अवसर है। केवल इसलिए नहीं कि तेरापंथ के महान नेतृत्व को आचार्य महाश्रमणजी सम्भाल रहे हैं। बल्कि इसलिए है कि जहां चारों ओर नेतृत्व की होड़ लगी है, दौड़धूप हो रही है वहीं तेरापंथ में नेतृत्व परिवर्तन की इतनी स्वस्थ परंपरा आज यहां देखने को मिल रही है। ऐसी प्रणाली देख मैं आश्चर्यचकित हूं। उन्होंने कहा कि आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने जो अणुव्रत आन्दोलन चलाया वह अणु नहीं है बल्कि महान है। इस आन्दोलन का नेतृत्व अब महाश्रमणजी के हाथों में हैं। वे मेरे जैसे राजनीतिज्ञों को नैतिक चेतना जगाने वाले इस आन्दोलन से मार्ग दिखाते रहे। यह आन्दोलन केवल हिंसा को ही समाप्त करने वाला नहीं है, इसके द्वारा सम्पूर्ण विश्व में शांति स्थापित हो सकती है। उन्होंने कहा कि जैन धर्म में तीन रत्न हैं। ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूपी इन रत्नों को प्राप्त कर सभी अपने जीवन को सार्थक एवं समर्थ बना सकते हैं।

भाजपा पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथसिंह ने कहा कि ईश्वर ऐसी शक्ति दे, ऐसा सामर्थ्य दें जिससे आचार्य महाश्रमण सम्पूर्ण मानव जाति को अहिंसा के इस परम संदेश से अनुप्राणित कर सके। अहिंसा जितना व्यापक रूप मिला है, विश्व में जो पहचान बनी है वह जैन धर्म के कारण बनी है। हिंसा को बल के द्वारा दबाया जा सकता है, आतंकवाद को भी बल के द्वारा कमजोर किया जा सकता है पर जो शांति का मार्ग है, उस पर चलने के लिए अहिंसा धारा चाहिए और उस अहिंसा को जीना कोई सीखा सकता है तो वह जैन धर्म ही है।

साध्वीप्रमुखाकनकप्रभा ने आचार्य महाश्रमण की अभिवन्दना करते हुए तेरापंथ की आचार्य परम्परा एवं उत्तराधिकारी नियुक्ति परम्परा पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने आचार्य के दायित्व एवं कर्त्तव्यों की भी चर्चा की। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने नेतृत्व के शिखर तक पहुंचने के लिए अध्यात्मनिष्ठा, आचार निष्ठा, आगमनिष्ठा, गुरुनिष्ठा को जरूरी बताते हुए कहा कि दुनिया में ऐसे व्यक्ति निराले होते हैं जो नेतृत्व के शिखर तक पहुंचते हैं। उन गिने–चुने व्यक्तियों में एक नाम है आचार्य महाश्रमण। उन्होंने अपने में नेतृत्व के सारे घटकों को समाहित किया है।

इस मौके पर राज्यसभा सांसद संतोष बागड़ोदिया, राजस्थान के स्वास्थ्य मंत्री राजकुमार शर्मा, पूर्व राजस्थान भाजपा अध्यक्ष महेश शर्मा, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोक नाहटा, आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमति गोठी, स्वागताध्यक्ष बिमलकुमार नाहटा, पदाभिषेक समारोह के संयोजक मिलाप दूगड़, साध्वी सुमतिप्रभा, एवं आचार्य महाश्रमण के संसारपक्षीय दुगड़ परिवार समणीवृंद नये आचार्य का अभिनन्दन करते हुए विचार व्यक्त किये। मुनि कुमार श्रमण ने मुनि सुमेरमल (लाडनूं) के पत्र का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

आडवाणी की अर्ज पर महाश्रमण की मर्जी

भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी ने आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ की तरह की कृपा रखने की विनती करते हुए दिल्ली जल्द से जल्द पधारने की अर्ज की। इस अर्ज पर मर्जी करते हुए आचार्य महाश्रमण ने पदाभिषेक के पश्चात फरमाया संघ के नाम संदेश में आचार्य तुलसी जन्म शताब्दि वर्ष में एक बार दिल्ली जाने की घोषणा की। इसके साथ ही उन्होंने पूर्व घोषित जसोल, केलवा के चातुर्मासों एवं आमेट, टापरा के मर्यादा महोत्सव को बिना संवत में बंधे यथासंभव समय की अनुकूलता के साथ करने की घोषणा की।

शीतल बरड़िया
(मीडिया संयोजक)